ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 505-506

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

डॉ0 लोहिया और महात्मा गाँधी – एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

संगीता यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र, नेताजी सुबाष चन्द्र बोस, पी0जी0 कॉलेज देवगाँव, आजमगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received- 03.08.2020, Revised- 08.08.2020, Accepted - 11.08.2020 E-mail: - rajadharmendra487@gmail.com

सारांश : ***राममनोहर लोहिया राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान गाँधी के निकट सम्पर्क में आये और अन्य समाजवादियों की तरह वे भी गाँधी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। गाँधी भी लोहिया के प्रति स्नेहभाव रखते थे और जब लोहिया जेल में थे तब 1941 ई. में गाँधी ने कहा: 'जब तक राममनोहर लोहिया जेल में है तब तक मैं खामोश नहीं बैठ सकता उनसे ज्यादा बहादुर और सरल आदमी मुझे मालूम नहीं। ''ओंकार शरद ने गाँधी और लोहिया के सम्बन्धों को विवेचन करते हुए लिखा है – ''जब दोनों बात करते तब दोनों की खूब सतर्क रहते, दोनों जानते थे कि होशियार आदमी से बात कर रहे हैं।''[1]***

कुंजीभूत शब्द– स्वतंत्रता संग्राम, समाजवादियों, व्यक्तित्व, स्नेहभाव, खामोश, बहादुर, होशियार, अहिंसात्मक सत्याग्रह।

लोहिया गाँधी को भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानते हैं और राष्ट्रप्ति के रूप में उनका आदर करते हैं। अहिंसा–सम्बन्धी उनका सिद्धान्त लोहिया अपने क्रान्ति दर्शन में स्वीकार करते हैं।[2] गाँधी के अहिंसात्मक सत्याग्रह का उपयोग लोहिया ने सिविल नाफरमानी के अपने सिद्धान्त में किया है। वे लिखते हैं : सिविलनाफरमानी अथवा अन्याय से शान्तिपूर्वक लड़ना अपने आपमें एक कर्त्तव्य है।'' लोहिया ने स्वीकार किया है कि गाँधी के व्यक्तित्व का वे आदर करते हैं। और यह भी कि गाँधी उन्हें चाहते थे और उनके कई लेखों को उन्होंने 'हरिजन' में उद्धृत किया था पर 'गाँधी और समाजवादी' अपने निबन्ध में लोहिया ने गाँधीवाद के अन्तर्विरोधों का भी उल्लेख किया है। उनका विचार है कि गाँधी ने जीवन के भौतिक और आर्थिक आधार की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया।[3] इस वक्तव्य से पता चलता है कि लोहिया गाँधीवाद को एक आदर्शवादी दर्शन मानते हैं और अपने समाजवादी चिन्तन को यथार्थ के अधिक से अधिक निकट लाना चाहते हैं। गाँधी की मृत्यु पर लोहिया ने कहा था ''उस दिन लगा कि असलियत में मैं पहली बार अनाथ हुआ, देश का सन्तरी सामने मरा पड़ा था और देश के राजा बने लोग आँसू बहा रहे थे।''[4]

स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान लगभग सभी समाजवादियों पर गाँधी के व्यक्तित्व का प्रभाव रहा है, यह बात सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं। पर कांग्रेस समाजवादी दल के एक प्रवक्ता होने के नाते लोहिया ने गाँधीवाद से आगे बढ़कर जो समाजवाद बनाया, वह अधिक यथार्थ जमीन पर स्थित है। गाँधी का सत्याग्रह सिद्धान्त उन्होंने जब सिविलनाफरमानी में इस्तेमाल किया तब वे इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि समाजवाद लाने के लिए अधिक कठोर कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा : ''गाँधी ने हमें वह रास्ता दिखाया जिसके जरिए साधारण लोग भी सुकरात या प्रल्हाद जैसे बन सकते हैं, वह है तकलीफ उठाने का हथियार, सिविलफरमानी का।''[5] गाँधी की सविनय अवज्ञा लोहिया के सिविलनाफरमानी आन्दोलन को काफी प्रेरणा देती है यद्यपि इसमें भी विश्वास करते हैं कि यदि सामूहिक सत्याग्रह से भी सरकार न माने तो प्रबल जनमत बनाना चाहिए और इस दिशा में उन्होंने घेराव का सिद्धान्त विकसित किया। लोहिया के समाजवादी चिन्तन में घेराव का कार्यक्रम उनकी लड़ाकू प्रवृत्ति का परिचय देता है। इसीलिए वे गाँधीवादी हृदय परिवर्तन में अधिक विश्वास नहीं करते और अन्याय का विरोध करने की सलाह देते हैं। वे क्रान्तीकरण के लिए जनता क्रान्ति की बात करते हैं और कहते हैं कि ''हमे नीचे की जनता की, किसान–मजदूर, विद्यार्थी की राजनीति चलाना है।''[6] गाँधी–चिन्तन आधार –भूमि नैतिक अधिक है और उसमें धर्म के लिए भी स्थान है। पर लोहिया का दृष्टिकोण अधिक बौद्धिक है और वे इन चीजो में अधिक आस्था नही रखते। यही कारण है कि जब गाँधी वर्ण–व्यवस्था में एकता की बात करते हैं तब लोहिया 'जाति तोड़ो' आन्दोलन चलाते हैं। लोहिया ने सवर्णों पर तीखे आक्रमण किये ओर वे ऐसे समतावादी समाज की कल्पना करते है जहाँ जातियों के बन्धन नहीं होगें। गाँधी ने हरिजनों के लिए बहुत कुछ किया पर लोहिया इस दिशा में निश्चय ही अधिक क्रान्तिकारी हैं। पिछड़ी जातियों में उन्होंने स्त्रियों को भी सम्मिलित किया और उन्हें वास्तविक क्रान्ति के लिए उकसाया।[7] लोहिया के समाजवादी चिन्तन में गाँधीवाद के सत्याग्रह सिद्धान्त के अतिरिक्ति विकेन्द्रीकरण, विश्व सरकार की कल्पना, ग्रामों की चिन्ता आदि का प्रभाव